

22 ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥

ASHA ARCHIVES

3284

4853

23111000A AH2A





ॐ नमः श्री गणेशाय नमः
॥ ॥ अथादि ॥ अमुक
गोत्रस्य यत्नमानस्य
मम सकल पापक्ष
यस्य सर्वसिद्धिर्वाप्स्यति
ये- पृथ्वीदानसम
फलप्राप्तये विद्वद्वा
दि श्रीपतंतादेवता
प्रीतये पूरुषोत्तम
भास्करप्रीतये वाच
यस्त्रिंशदपूपदान
निमित्तार्थं श्रीसूत्र
॥ दीक्षितश्चेत् ॥ गुरु
रुत्तमस्कारादी ॥ ओ
म् पुष्पात् ॥ ॥ ततोप
पपूजयेत् ॥ ॐ विद्महे
दि श्रीपतंतात्रयस्त्रि

हामिदेवेभ्यः पूरुषा
नमभास्कराभ्यां इ
दमासर्जनमः॥ पूरुषं
२॥ सर्वपाप्यादिभूष
दीप-पातनं॥ ॥ विष्णु
दिदेवतापूजनं॥ देवता
नामानि तु मे विष्णु॥
ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ का
ल्मेय नमः॥ ॐ महावि
ष्णुवे नमः॥ ॐ हरये॥
ॐ कृष्णाय॥ ॐ अक्षो
क्षाय॥ ॐ वायवे॥
ॐ माधवाय॥ ॐ रामा
य॥ ॐ अच्युताय॥
ॐ पूरुषोत्तमाय॥ ॐ
विन्द्याय॥ ॐ वामना
य॥ ॐ श्रीशाय॥ ॐ

श्रीकराय॥ ॐ विश्व

श्री क रा ठ य र ॥ ॐ विश्व
साक्षि रौ र ॥ ॐ नारायण
य र ॥ ॐ मधुरि प वे र ॥
ॐ अनिरुद्रा य र ॥ ॐ
* विवि क मा य र ॥ ॐ वा
सु दे वा य र ॥ ॐ जगद्गो
नै य र ॥ ॐ अनन्ता य र ॥
ॐ शेष र ॥ विनै र ॥ ॐ स
क ष र ॥ य र ॥ ॐ पु ण्ड्र म
य र ॥ ॐ दै त्वा र य र ॥ ॐ
विश्व तौ मू र्वा य र ॥ ॐ
ज ना र्द ना य र ॥ ॐ ध्रु
वा सा य र ॥ ॐ दा म्भा य र
य र ॥ ॐ अद्या द ना य
र ॥ ॐ श्री प त य र ॥ इति
त्रय स्त्रिंशति देवता ॥
ॐ पू र षो त्त मा य र ॥
ॐ भा स्करा य र ॥ ॥ इ
ति पूजयित्वा ॥ अथ या
ज लिङ्ग ॥

ॐ विष्णुवादित्राय नमः
 नमः स्वास्तिदिव
 ताम्भः पूरुषात्तमभा
 स्कराभ्यानिमः ॥ इति
 विष्णुपूजा ॥ जप ॥ सो
 वे ॥ ॥ ॐ सुवनन्ताया
 दक्षिणा ॥ वात्सराप
 जा ॥ कुशाक्षर्तुगुहि
 त्वा ॥ उत्सर्गः ॥ ॐ विष्णु
 रूपि सहस्रं भुसर्व
 पाप्रवोशनः ॥ अय
 पान्नपुदानेनममपा
 र्थवपौहतु ॥ ॥ कुशा
 दयं वात्सराहसेदद्या
 त ॥ स्तुतं कौश्यावा
 तर्गतत्रयेस्त्विंशदप
 रं विष्णुदेवतं कौश्या
 पात्रं विश्वकर्मादे

सवर्गपतिः

सुवर्णमग्निदे० धूर्त
भास्करदे० तावत्सर्ववि
आधारदेवर्तपीतवस्त्र
सेहस्यातिदेविश्वरू
पिरोब्राह्मरायदान
दातव्य॥ ॐ ददस्वेति।
कुर्वागृहियात्॥ १॥ अ
थ सर्वकल्पे॥ नमस्त॥
ॐ विष्णु॥ देहाकार्त्त
रीकीर्त्य॥ अमृगोत्र
समम० पूर्ववत्॥ त्रय
स्त्रिंशदपूपेते० को
र्यपात्रं सुवर्णधृत
तावत्सर्ववस्त्रदक्षिणा
दिसोपस्करं विष्णुदेव
त० अमुकगोत्रायवा
ह्मरात्यादि नमः॥

प्रार्थना॥ नारायण
जनद्वजभास्कररूप
कः॥ दानेनानेनपुत्रा
श्च स यदद्यापि वक्ष्य
॥ यस्य हस्तोऽङ्गुली कला
काष्ठादिरूपे रानि
मेष धाटि कादिना॥
यो वचयति भूतानि त
स्मै कालात्मने नमः
॥ कुरु क्षेत्रमयं देशं
सूर्यपर्वद्विजो हरिः॥
पृथ्वीसममिदं द
नं हारापुरुषां त
म॥ मलानां विवि
धार्थं पापप्रहमना
यव॥ पुत्रपौत्रवि
वृध्यर्थं

प्रदत्तं तव भास्कर
॥ मंत्रैरेतैश्च यो द
शात्त्रयस्त्रिंशद
पुष्पकोत्तर ॥ प्राप्नो
ति विपुला लक्ष्मी पु
त्रपौत्रादि सर्वपदम्
॥ दानप्रतिष्ठा ॥ कृ
तेतरसोपस्कराः
त्रयस्त्रिंशतिपुष्पदा
नकृतप्रतिष्ठाथः इ
मां दक्षिणां तां सुवा
रजतं तुभ्यं महं स
॥ ॥ तजो क ह्य रौ न
आशीर्वा दददेत् ॥
॥ ॥ सूर्यो साक्षिः ॥

कायेनवावेति-कृ-
ष्णार्पणम्ः॥ ॥
इति-अपूपदान
विधिः॥ ॥ शुभम्॥

3284

ASHA ARCHIVES

५८

३२ अपूपदानविधिः